उच्च माध्यमिक कक्षा 11वीं कला शाखा के छात्रों में स्थित व्यक्तित्व विषयक गुणों का अध्ययन

*** डॉ. लांडगे एन.एन. ** डॉ. अहिरे पी.ए.**

जलगाव जिले में भुसावल तहसील क्षेत्र के विभिन्न महाविद्यालय में पढ़नेवाले विद्यार्थियों के व्यक्तिमत्त्व का अध्ययन करना तय किया गया।

उद्देश्यः– 1. भारतीय संस्कृति द्वारा अपेक्षित व्यक्तित्त्व मँल्यों का शोध करना। 2. भारतीय संस्कृति द्वारा उद्‌घोषित व्यक्तित्व विकास विषयक पहलूओं का शोध करना। 3. भारतीय संस्कृति द्वारा अपेक्षित व्यक्तित्त्व विकास गुण और कला शाखा के छात्रों में स्थित मूल्यों की तुलना करना।

आवश्यकता एवं महत्त्व–प्राचीन शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण अंग भारतीय शिक्षा मनोविज्ञान था। योग, ब्रह्मचर्य, संस्कार, संयम, सत्य, तप इत्यादि गुणों से छात्रों का व्यक्तित्त्व विकसित किया जाता था। गुरू शिष्य एक साथ आश्रम में रहकर गुरू सानिध्य में अनुभूति सं शिक्षा लेता था। अनुवंश या जिस गति में व्यक्ति का जन्म होता है उसी प्रभाव से व्यक्ति का स्वभाव बनता है। प्राचीन ऋग्वेद काल से व्यक्तित्त्व विकास का विचार किया गया है। उसके अनुसार जीव और शिव, आत्मका और परमात्मा या सहयोग माना गया है। योग दर्शन में व्यक्तित्त्व विकास महत्त्वपूर्ण माना है। इस सभी पहलूओं को ध्यान में रखकर छात्रों के व्यक्तिमत्व में स्थित गुणों को परखकर उनके विकास के लिए क्या करना आवश्यक है। उसके विकास के लिए कौन से प्रयास करना आवश्यक है? यह जानने के लिए इस अध्ययन की आवश्यकता और महत्त्व है। छात्रों के व्यक्तिमत्व विकास से किन प्रयासों की आवश्यकता है किस हद तक छात्रों का व्यक्तिमत्व गुणों की वर्तमान स्थिति है? यह सब समझने के लिए महत्त्व है। **व्याप्ति और मर्यादा–**प्रस्तुत अध्ययन की व्याप्ति और मर्यादा इस प्रकार थी। जलगाँव जिले के भुसावल तहसील में शहरी इलाके के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों का अध्ययन करना था। इसमें छात्र और छात्रॉए तथा उनके विभिन्न आर्थिक स्तर को ध्यान में रखते हुए उसका न्यादर्श निर्धारित किया गया। इसी प्रकार उनउ च्च माध यमिक विद्यालयों के अध्यापक, प्रधानाध्यापक, अन्य प्रशासनिक अधिकारी एवं कर्मचारी की संख्या निर्धारित की गई। उसी प्रकार केवल कक्षा 11 वी और कला शाखा के विद्यार्थियों का चयन किया गया। **संशोधन पद्धति और साधन–**प्रस्तुत अध्ययन के लिए नमुना सर्वेक्षण पद्धति निश्चित की गई और लिखित प्रश्नावली और साक्षात्कार यह प्रमुख साधन तथ्य संकलन के लिए उपयोग में लाए गए। **नमुना निश्चिती–**भुसावल शहर में स्थित सभी उच्च माध्यमिक विद्यालय में पढनेवाले सभी छात्राओं की सूची बनाकर लॉटरी पद्धति द्वारा छात्र, छात्राएँ, विभिन्न आर्थिक और सामाजिक स्तर को ध्यान में रखते हुए पचास छात्र और पचास छात्राएँ निश्चित किए गए। उसी प्रकार पॉच शिक्षक, पॉच शिक्षिका, पाच कर्मचारी और पाच प्रधान अध्यापक 'नमुना' के रुप तय किए गए। **तथ्यों का विश्लेषण–**प्रश्नावली और साक्षात्कार द्वारा प्राप्त संकलन को वर्गीकृत किया गया। प्राप्त जानकारी को संख्यात्मक रुप दिया गया। उन तथ्यों का विश्लेषण इस प्रकार था। छात्र और छात्राओं में निचे दिए हुए व्यक्तिमत्व गुण विशेष स्थित होने की जानकारी मिली :–

◈ **अध्ययन के निष्कर्ष :–** 1) ज्यादातर छात्र अपने व्यक्तित्व विकास के बारे में सजग थे। 2) छात्राएँ छात्रों की तुलना में अधिक सजग थी। 3) अपनी प्राचीन सभ्यता, संस्कृति के प्रति सभी संवेदनशील थे। 4) आधुनिक वातावरण में विकसित व्यक्तित्व के लिए सबसे जादा 'तनाव व्यवस्थापन' इस गुण को महत्त्व दिया गया। 5) जीवन मूल्यों का आधार और अधिकार व कर्तव्य में संतुलन की आवश्यकता छात्रों ने बताई। 6) वर्तमान स्थिति में मानव अधिकार संरक्षण के प्रति उनकी सजगता भी सामने आयी।

उपसंहार :– व्यक्तित्व विकास के लिए आधुनिक वर्तमान स्थिति में प्राचीन सभ्यता और आधुनिक आवश्यकताएँ इनका अनोखा समन्वय करना आवश्यक है। आधुनिक वर्तमान स्थिति की जानकारी और आवश्यकता के बारे में आजका युवक सजग दिखाई देता है। इस अध्ययन में व्यक्तिमत्व विकास का आधुनिक सूत्र सामने आता है। जिस सूत्र/सिध्दांत के अनुसार तनाव व्यवस्थापन की सर्वाधिक प्राथमिकता है। जीवन मूल्यों का आधार उतना ही जरूरी है। लोकतंत्र देश की सफलता कुंजी अपने अधिकार कर्तव्यों की पर्याप्त संतुलन बनाए रखना यह है।

अ. न.	गुण विशेष	प्रतिशत मात्रा
१.	मित्रता	६२
२.	शिष्टाचार	७४
३.	जीवन मूल्यों का आधार	८५
४.	आत्मसंयमन	७८
५.	स्वावलंबन	६८
६.	तनाव व्यवस्थापन	८८
७.	मानव अधिकार संरक्षण	८०
८.	भ्रष्टाचार का विरोध	६६
९.	आतंकवाद का विरोध	७२
१०.	अधिकार व कर्तव्य में संतुलन	८३

सन्दर्भ–

1) Resaearch in Education – John Besat 2) शैक्षिक अनुसंधान प्रविधि 3) Resaearch in Education – Survey of Educational Resaearch Volum 1 to 5 4) शैक्षणिक संशोधनाची मुलतत्वे – प्रा. मुळे, प्रा. उमाठे 5) बाल मनोविज्ञान – प्रा. भाई योगेंद्रजित 6) योग मनोविज्ञान – डॉ. आत्रेय शांति प्रकाश।

*** साने गुरुजी विद्याप्रबोधिनी सर्व समावेशक शिक्षण शास्त्र महाविद्यालय, खिरोदा (महाराष्ट्र)**
**** भुसावल कला, विज्ञान एवं पु. ओं नाहाटा वाणिज्य महाविद्यालय, भुसावल**